



राजभवन सूचना परिसर, उत्तराखण्ड
प्रेस विज्ञप्ति-3

राजभवन देहरादून 01 सितम्बर, 2024

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने 9 अगस्त को एक Health Warrior के खिलाफ की गई हिंसा को चरम क्रूरता करार दिया और इसे पूरी मानवता को शर्मसार करने वाला बताया। AIIMS ऋषिकेश में छात्रों और संकाय के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए आज उन्होंने कहा कि ऐसे क्रूर कृत्य पूरी सभ्यता को शर्मिंदा करते हैं और भारत के आदर्शों को तहस-नहस कर देते हैं।

इस घटना के संदर्भ में कुछ लोगों द्वारा 'लक्षणात्मक विकृति' शब्द के उपयोग पर अफसोस जताते हुए, श्री धनखड़ ने कहा कि ऐसी टिप्पणियां हमारे दर्द को और बढ़ाती हैं और हमारी घायल अंतरात्मा पर नमक छिड़कती हैं।

“जब मानवता को शर्मिंदा किया जाता है, तो कुछ आवाजें होती हैं, जो चिंता का कारण बनती हैं। वे केवल हमारे दर्द को और बढ़ाती हैं। सीधे शब्दों में कहें तो वे हमारी घायल अंतरात्मा पर नमक छिड़क रही हैं। जब यह बातें संसद के सदस्य, वरिष्ठ वकील से आती हैं, तो यह अत्यधिक दोषपूर्ण होती हैं। ऐसे भयंकर विचारों के लिए कोई बहाना नहीं हो सकता। मैं ऐसी गलतफहमी में पड़े लोगों से पुनः विचार करने और सार्वजनिक रूप से माफी मांगने का आह्वान करता हूँ। यह एक ऐसा अवसर नहीं है जहाँ आप राजनीतिक दृष्टिकोण से देख रहे हैं। यह राजनीतिक दृष्टिकोण एक खतरनाक होता है, यह आपकी वस्तुनिष्ठता को मारता है,” उन्होंने कहा।

स्वास्थ्य पेशेवरों और इस देश की महिलाओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी को मानते हुए, श्री धनखड़ ने कहा, “मैं आपके सामने हूँ। एक संवैधानिक पद पर होने के नाते, मुझे अपनी जिम्मेदारी दिखानी होगी, मुझे उपराष्ट्रपति और राज्यसभा अध्यक्ष के रूप में जो पद है, उसकी पुष्टि करनी होगी।”

“ऐसे घटनाओं से हमारा दिल घायल है, हमारी अंतरात्मा रो रही है और जवाबदेही की मांग कर रही है,” उन्होंने कहा।

स्वास्थ्य पेशेवरों के काम को 'निष्काम सेवा' बताते हुए, जैसा कि भगवान कृष्ण ने बिना किसी अपेक्षा के अपनी सेवा का आदेश दिया था, उपराष्ट्रपति ने डॉक्टरों के खिलाफ किसी भी प्रकार की हिंसा की निंदा की।

डॉक्टरों की सुरक्षा के प्रति चिंता जताते हुए, उन्होंने एक ऐसा तंत्र बनाने पर जोर दिया जिसमें स्वास्थ्य योद्धाओं को पूरी तरह सुरक्षित रखा जा सके।

“एक डॉक्टर केवल एक सीमा तक ही मदद कर सकता है। डॉक्टर खुद को भगवान में नहीं बदल सकता। वह भगवान के करीब है, इसलिए जब कोई व्यक्ति की मृत्यु होती है, भावनात्मक और अनियंत्रित भावनाओं के कारण डॉक्टरों को वह व्यवहार नहीं मिलता जिसका वे

हकदार हैं। डॉक्टरों, नर्सों, कंपाउंडर्स और स्वास्थ्य योद्धाओं की सुरक्षा पूरी तरह से सुनिश्चित की जानी चाहिए,” उन्होंने कहा।

एनजीओ के चयनात्मक मौन की आलोचना करते हुए श्री धनखड़ ने कहा कि, “कुछ एनजीओ एक घटना पर चुप्पी साध लेते हैं। हमें उनसे सवाल करना चाहिए। उनकी चुप्पी इस धिनौनी अपराध के अपराधियों की दोषपूर्णता से भी बदतर है। जो लोग राजनीति खेलना और राजनीतिक अंक जुटाना चाहते हैं, वे अपनी अंतरात्मा की पुकार का जवाब नहीं दे रहे।”

समाज की जिम्मेदारी को उजागर करते हुए और महिलाओं को सुरक्षित महसूस कराने के लिए एक तंत्र विकसित करने की आवश्यकता पर बल देते हुए, उपराष्ट्रपति ने कहा, “जो कुछ भी हुआ, वह जवाबदेही के दायरे में आएगा लेकिन समाज भी जिम्मेदार है। समाज अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। मैं इसे सरकार या राजनीतिक पार्टियों का मामला नहीं बनाना चाहता। यह समाज का मामला है, यह हमारे अस्तित्व की चुनौती है। इसने हमारे अस्तित्व की नींव को हिला दिया है। इसने भारत के आदर्शों को सवाल किया है जो हजारों वर्षों से कायम हैं।”

“यह अवसर राजनीतिक अंक जुटाने का नहीं है। यह गैर-पार्टी है। इसमें द्विदलीय प्रयास की आवश्यकता है। सभी हितधारकों के मिलकर एक मंच पर आने की आवश्यकता है,” उन्होंने जोड़ा।

इस अवसर पर डॉ. (श्रीमती) सुदेश धनखड़, राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (से नि) एवं निदेशक एम्स ऋषिकेश प्रो. मीनू सिंह आदि उपस्थित थे।

.....0.....